DSSSB TGT & PGT
Part-B
SCHOLAR BATCH
संस्कृत
छंद
Part -2
LIVE
17-06-2024 05:00 PM

छंद

स्वर

यमाताराजभानसलगा

यगण

मगण

तगण

रगण

जगण

भगण

नगण

सगण

यमाता ⇒ लघु

भानसा ⇒ गुरु

वर्णिक छन्दः

(2) अनुष्टुप् छन्द

(8 X 4 = 32)

• लक्षण :-

ऽ I

श्लोके षष्ठ गुरु ज्ञेयं, सर्वत्र लघु पंचमम् ।
द्विचतुष्पादयोः ह्रस्वं, सप्तमं दीर्घ मन्ययोः ॥

2, 4 ⇓ 7 = I

1-3 → ऽ

लक्षण का अर्थ - जिस छन्द के प्रत्येक चरण में 8-8 वर्ण होते हैं चारों चरणों में पाँचवा वर्ण लघु और छठा वर्ण गुरु होता है। पहले और तीसरे में सातवां वर्ण गुरु तथा दूसरे और चौ चरण में सातवां वर्ण लघु होता है। वहाँ अनुष्टुप् छन्द होता है।

अनुष्टुप छन्द के प्रत्येक चरण में 8 अक्षर होते हैं। इस प्रकार चारों चरणों 32 अक्षर होते हैं।

उदहारण

8X4 = 32 वर्ण

1. गुरुर्ब्रह्म गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

2. शैले- शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे-गजे ।
साधवो नहि सर्वत्र चन्दनं न वने वने ॥

3. वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये ।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ ॥

1 जुलाई
Mock Test

(3) इन्द्रवज्रा छन्द

11 X 4 = 44 वर्ण

• लक्षण - स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः

तगण तगण जगण गुरु गुरु
ऽऽ। ऽऽ। ।ऽ। ऽ ऽ

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः तगण, तगण, जगण एवं अन्त में दो गुरु वर्ण आते हैं। इस प्रकार प्रत्येक चरण में 11-11 वर्ण होते हैं, वहाँ इन्द्रवज्रा छन्द होता है ।

उदहारण-

तगज तगज जगज = गु.गु.

SSI SSI ISISS

1. हे कृष्ण ! गोविन्द ! हरे मुरारे! हे नाथ! नारायण ! वासुदेवः !

2. अर्थो हि कन्या परकीय एव, तामद्य संप्रेष्य परिग्रहीतुः
जातो ममायं विशदः प्रकामं प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा ।

3. श्रीनाथ नारायण वासुदेवं श्रीकृष्ण भक्तप्रिय चक्रपाणे ।
श्रीपद्मनाभाच्युत कैटभारे, श्रीराम पद्माक्ष हरे मुरारे ॥

(4) उपेन्द्रवज्रा छन्द

(11×4=44)

लक्षण:- उपेन्द्रवज्रा जततजास्ततो गौ । जगण तगण जगण गु गुरु

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः जगण, तगण, जगण तथा अन्त में दो गुरु वर्ण होते हैं, उसे उपेन्द्रवज्रा छन्द कहते हैं ।

उपेन्द्रवज्रा छन्द के प्रत्येक चरण में 11-11 वर्ण होते हैं इस प्रकार चारों चरणों में 44 वर्ण होते हैं।

उदाहरण-

जगण तगण जगण गु गु ·
ISI SSI ISI S S

1. त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देव देवः ॥

2. परोपकाराय फलन्ति वृक्षा, परोपकाराय वहन्ति नद्यः ।
परोपकाराय दुहन्ति गावः, परोपकार्थमिंद शरीरम् ॥

3. सुखस्य दुखस्य नकोऽपि दाता, परो ददातीति कुबुद्धिरेषा ।
अहं करोमीति भृषाभिमानः, स्वकर्म सूत्र ग्रथितो हि लोकः ॥

(5) उपजाति छन्द

लक्षण-

स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः, उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ
अनन्तरोदिरित लक्ष्मभाजौ, पादौ यदीयावुपजातयस्ताः

जिस छन्द में इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के लक्षण मिले होते हैं, उसे उपजाति कहते हैं ।

उपजाति छन्द के प्रत्येक चरण में 11 वर्ण, इस प्रकार चारों चरणों में 44 वर्ण होते हैं ।

उदाहरण

1. येषां न विद्या न तपो न दानं ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः ।
ते मर्त्यलोके भुविभारभूताः, मनुष्य रूपेण मृगाश्चरन्ति ।

2. श्रोतं श्रुतेनैव न कुण्डलेन, दानेन पाणिर्नतु कङ्कणेन ।
विभाति कायः करुणा पराणाम् परोपकारेण च चन्दनेन । ।

3. भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ता, तपो न तप्तं वयमेव तप्ताः ।
कालो न यातो वयमेव याताः, तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः ॥

(5) वंशस्य छन्द

जतौ जरौ

जगण तगण जगण रगण

ISI SSI ISI SIS

लक्षण - जतौ तु वंशस्थ मुदीरितं जरौ

वंशस्थ छन्द के प्रत्येक चरण में 12 वर्ण होते हैं। इसके प्रत्येक चरण में जगण, तगण, जगण, रगण होते हैं ।

उदाहरण-

जगण तगण जगण रगण

। ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ

तस्व:

1. भवन्ति नम्रास्तवः फलोद्गमः, नवाम्बुविर्दूरविलम्बिनो. घनाः अनुद्धताः सत्यपुरुषाः समृद्धिभिः, स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्